आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रबुद्ध शिष्य मुनि श्री रमेशकुमारजी (सरदारशहर) : जीवन परिचय :

तेरापंथ धर्म संघ के वरिष्ठ संत मुनि श्री रमेश कुमार जी का जन्म सरदारशहर (राजस्थान प्रान्त, बीकानेर संभाग) में सेठिया (ओसवाल) गोत्र में वि. सं. **2020** भाद्रव शुक्ला पंचमी (संवत्सरी) तदनुसार दिनांक **24** अगस्त, **1963** शनिवार को पिता श्री मंगल चन्द जी के कुल में माताश्री रेंवती देवी जी की कुक्षी से हुआ । आपने गृहस्थ अवस्था में मेट्रिक तक अध्ययन किया ।

वैराग्य :

वि.सं. 2033 में आचार्य श्री तुलसी का चातुर्मास सरदारशहर था । तब संतों के संपर्क में आने से वैराग्य भावना जागृत हुई । और मुनि दीक्षा लेकर मोक्ष पथ पर आगे बढ़ने का निश्चय किया एवं अपेक्षित तत्वज्ञान सीख कर आपने दीक्षा की तैयारी कर ली ।

साधु प्रतिक्रमण का आदेश :

सरदारशहर शहर चातुर्मास के पश्चात आचार्य श्री तुलसी छापर (राजस्थान) पधारे । वहां जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के अष्टमाचार्य परम पूज्य कालूगणी का जन्म शताब्दी समारोह का आयोजन था ।
उस भव्यतम समारोह में आचार्य श्री तुलसी ने आपको साधु प्रतिक्रमण सीखने का आदेश फरमाया ।

दीक्षा :

दीक्षा की स्वीकृति में कुछ कठिनाई रही । गुरुदेव द्वारा समझाने पर माता-पिता की सहमति मिल गई ।

वि.सं. **2035** में आचार्य श्री तुलसी का पावस-प्रवास गंगाशहर में था । श्री रमेश कुमार के परिवारीक सदस्य की मृत्यु हो गई थी । संबल प्राप्त करने पारीवारिकजन गुरुदेव के दर्शनार्थ गंगाशहर गये । सूरजमलजी दूगड़ (जौहरी) भी साथ में थे । गुरु दर्शन के पश्चात उन्हें प्रेरित करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने फरमाया-गंगाशहर में दीक्षाएं हो रही है, तुम जौहरी हो, क्या इसकी (रमेश की) दीक्षा साथ में नहीं हो सकती ?' उन्होंने गुरु-वचनों को शिरोधार्य किया ।

जहां माता-पिता आदि अभिभावक जन ठहरे हुए थे, वहां आये । सबको समझाकर दीक्षा अनुमति के लिए सहमत कर लिया । प्रवचन के पश्चात प्रार्थना करने पर गुरुदेव ने दीक्षा का आदेश दे दिया ।

दीक्षा :

मुनि रमेश कुमारजी ने **15** वर्ष की अविवाहित वय (नाबालिग) में सं. **2035** आश्विन शुक्ला पूर्णिमा (शरद् पूर्णिमा) सन् **16** अक्टूबर **1978** को गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी ने गंगा शहर में दीक्षा प्रदान की ।

उस दिन **13** मुमुक्षुओं की दीक्षाएं हुईं । **5** भाई और **8** बहिनों को आचार्य श्री तुलसी ने दीक्षा प्रदान की ।

उनके क्रमशः नाम इस प्रकार हैः-

1. मुनि श्री पूर्णानंद जी
2. मुनि श्री राजकुमार जी
3. मुनि श्री अजित कुमार जी
4. मुनि श्री रमेश कुमार जी
5. मुनि श्री सुमति कुमार जी
6. साध्वी श्री प्रतिभाश्री जी
7. साध्वी श्री ऋजुप्रज्ञा जी
8. साध्वी श्री भावना श्री जी
9. साध्वी श्री मंगलमाला जी
10. साध्वी श्री ललित कला जी
11. साध्वी श्री जिनबाला जी
12. साध्वी श्री मधुलता जी
13. साध्वी श्री विभाश्री जी

मुनि रमेश कुमार जी की संसार पक्षीया बहिन साध्वीश्री उज्ज्वल रेखा जी वि.सं. **2032** में दीक्षित हुई ।

आपकी संसार पक्षीय भतीजी साध्वी नम्रप्रभा जी और संसार पक्षीय भतीजा रत्न कुमार जी भी दीक्षित हैं ।

सहयोगीः

दीक्षित होने के बाद आचार्य श्री तुलसी ने आपको मुनि सुमेरमलजी 'सुमन' (सुजानगढ़) के साथ भेजा । तब से उनके देवलोक गमन तक अर्थात् **23** वर्षों तक अन्तेवासी बनकर साथ रहे । जीवन में हर दिशा में विकास किया । अच्छा अध्ययन भी किया । अन्यान्य कार्यों में उन्हें अच्छा सहयोग देते रहे ।

शिक्षा :

गृहस्थ जीवन में दस तक स्कूल की सांसारिक शिक्षा प्राप्त की एवं दीक्षित होने के पश्चात दशवैकालिक, उत्तराध्ययन (कुछ अध्ययन), जैन- सिद्धान्त दीपिका, आचारबोध,

विचार बोध, भक्तामर, शान्त सुधारस भावना, पंच संधि, कारक समास के अलावा नाममाला के कुछ कांड आदि कंठस्थ किये । अनेक आगमों का अर्थ सहित वाचन किया ।

तपस्या :

1. वि.सं. **2043** से सं. **2078** तक चातुर्मास में दो माह (श्रावण-भाद्रव) एकान्तर तप किया ।
2. उपवास-**148**
3. बेला-**3**
4. तेला-**3**
5. **9** आयंबिल तप **7** बार
6. **15** आयंबिल **3** बार
7. **31** आयंबिल **2** बार किया ।

साधना :

आप संयक् ज्ञान, संयक दर्शन और संयक् चारित्र का आराधना करते हुए मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर हो रहे हैं । आपका प्राय: **2** घंटा मौन, एक घंटा स्वाध्याय, एक घंटा जप, ध्यान व आसन का क्रम चलता है । प्रेक्षाध्यान में रुचि है और प्रशिक्षण भी लिया हुआ है ।

सेवा :

पहला प्रसंग-

वि.सं. **2052** 'लाडनूं' मर्यादा-महोत्सव के पश्चात मुनि श्री सुमेरमलजी 'सुमन' ने भीलवाड़ा (मेवाड़) चातुर्मास के लिए विहार किया । बोरावड़ में स्थित मुनि श्री मिलापचंदजी स्वामी और समागत मुनि श्री सागरमल जी 'श्रमण' से मिलन हुआ । कुछ दिनों के पश्चात दोनों सिंघाड़े विहार करके मदनगंज-किशनगढ़ पहुंचे । वहां मुनि सागरमलजी के सहयोगी मुनि विमल विहारीजी के दांत निकलवाने के कारण वेदना बढ़ गई । मुंह से खून गिरने लगा । ब्लडप्रेशर ज्यादा हो गया । डाक्टर के कथनानुसार दवाई दी गई ।

संध्या प्रतिक्रमण के समय पुन: खून गिरना चालू हो गया । स्थिति इतनी गंभीर बन गई कि सभी संत चिंतित से होकर बोले-'अब रात कैसे निकलेगी ?' वहां के प्रमुख भाईयों को भी जानकारी गई । वे लगभग साढ़े आठ वजे डॉक्टर को लेकर आये । उन्होंने सारी स्थिति समझकर परामर्श देते हुए कहा-'मुनिजी द्वारा भूल से उन कच्चे घावों पर अंगुली लगाने से यह स्थिति बनी है और प्रेशर अधिक हो गया है । एक इन्जेक्शन देने से आराम हो जायेगा ।'

मुनि विमल विहारीजी ने कष्ट सहिष्णुता का परिचय देते हुए संतों से हाथ जोड़कर कहा-'रात्रि में कोई भी दवा और इंजेक्शन मेरे को न दें ।' दृढ़निष्ठ होकर चार मांगलिक शरणों का स्मरण करने लगे । साधुओं ने भी 'ओम् भिक्षु जय भिक्षु' का जप चालू कर दिया ।

कुछ समय बाद अन्य साधु पास वाले कमरे में विश्राम हेतु चले गये । रमेश मुनि उनके पास बैठे रहे । रात्रि में लगभग साढ़े बारह बजे मुनि विमल कुमारजी मुंह से आते हुए खून को थूक रहे थे पर उनसे थूका नहीं गया । रमेश मुनि ने हाथ से खून का उचका निकाला । देखते-देखते कुछ ही क्षणों बाद ऐसी स्थिति बनी कि उनकी आंखें घूम गईं और हाथ-पैर ठंडे हो गये । चेतनाशून्य से प्रतीत होने लगे । रमेश मुनि द्वारा आवाज देने पर सभी संत वहां आ गये । नाड़ी देखी तो पकड़ में नहीं आई । रमेश मुनि ने दोनों हाथों से उनके हार्ट की मालिश की और उसे दवाया, जिससे उन्हें कुछ राहत मिली ।

डाक्टर के कहे अनुसार दवाई दी गई । आहार करने के पश्चात भूल से उस स्थान पर अंगुली लग गई । खून बहने लगा । सर्दी की मौसम दिन भी बहुत कम था । डाक्टर कुछ समय पहले आकर भी गया था तब सब ठीक था । मुनिश्री सागरमल जी स्वामी ने कुछ घरेलू उपचार भी किये । परन्तु खून बंद नहीं हुआ । सूर्यास्त के समय मैं कुछ रेत लेकर आया । प्रतिक्रमण सुनाने लगा । कुछ ही देर में रेत खून से भर गई । पुनः मैं छत पर बाल्टी लेकर गया । आधी बाल्टी रेत लेकर आया । खून गिरने का क्रम जारी था । स्थिति इतनी गंभीर बन गई कि सभी संत चिंतन करने लग । अब रात कैसे निकलेगी ?' वहां के प्रमुख भाईयों को भी जानकारी दी । वे लगभग साढ़े आठ बजे डॉक्टर को लेकर आये । उन्होंने सारी स्थिति समझकर परामर्श देते हुए कहा-'मुनिजी द्वारा भूल से उन कच्चे घावों पर अंगुली लगाने से यह स्थिति बनी है और प्रेशर अधिक हो गया है । एक इन्जेक्शन देने से आराम हो जायेगा ।'

मुनि विमल विहारीजी ने दृढ मनोबल एवं कष्ट सहिष्णुता का परिचय देते हुए संतों से हाथ जोड़कर कहा- 'रात्रि में कोई भी दवा और इंजेक्शन मेरे को न दें ।' दृढ़निष्ठ होकर चार मांगलिक शरणों का स्मरण करने लगे । साधुओं ने भी 'ओम् भिक्षु जय भिक्षु' का जप चालू कर दिया ।

कुछ समय बाद अन्य संत भी पास वाले कमरे में विश्राम हेतु चले गये । रमेश मुनि उनके पास बैठे रहे । रात्रि में लगभग साढ़े बारह बजे मुनि विमल कुमारजी मुंह से आते हुए खून को थूक रहे थे पर उनसे थूका नहीं गया । रमेश मुनि ने हाथ से खून का उचका निकाला । देखते-देखते कुछ ही क्षणों बाद ऐसी स्थिति बनी कि उनकी आंखें घूम गईं और हाथ-पैर ठंडे हो गये । चेतनाशून्य से प्रतीत होने लगे । रमेश मुनि द्वारा आवाज देने पर सभी संत वहां आ गये । नाड़ी देखी तो पकड़ में नहीं आई । रमेश मुनि ने दोनों हाथों से उनके हार्ट की जोर जोर से मालिश की और उसे दबाया, जिससे उन्हें कुछ राहत मिली । आंखे खोली । अपने आप अब खून गिरना बंद हो गया । अब प्रेशर लो होने से मूर्च्छा की स्थिति बनने लगी ।
(एक बार रमेश मुनि ने डॉक्टर को इस प्रकार हार्ट को दबाते हुए व मालिश करते हुए देखा था उसका उपयोग कर लिया ।)

प्रातः डाक्टर ने समुचित उपचार किया । दो दिनों तक औषध का सेवन करने से वे स्वस्थ हो गये । डाक्टर की सलाह से कुछ दिन दवाई का सेवन किया । मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' आदि सभी संत उनकी परिचर्या में संलग्न रहे । दोनों सिंघाड़ों ने

वहां से विहार कर दिया। अजमेर तक साथ-साथ रहे। फिर अपने-अपने निर्दिष्ट क्षेत्रों की तरफ अलग-अलग प्रस्थान कर दिया।

नोखा मर्यादा-महोत्सव के समय एक प्रसंग पर युवाचार्य महाश्रमणजी ने इस घटना का प्रवचन में उल्लेख करते हुए कहा- मुनि रमेशकुमारजी ने समय पर हार्ट की मालिश कर मुनि विमल विहारीजी को बचा लिया।'

दूसरा प्रसंग

1 जनवरी **1999** को मध्यान्ह में दो बजे मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन' एवं मुनिश्री दुलहराज जी आदि छह संतों ने टोहना के लिए प्रस्थान किया। लगभग तीन किलोमीटर की दूरी पर सायं चार बजे के आसपास एक टाटा सूमो ने मुनि सुमेरमल जी 'सुदर्शन' को पीछे से टक्कर मार दी। गाडी बहुत तीव्रगति से चल रही थी। ऐसा ज्ञात हुआ है कि ड्राइवर शराब के नशे में धुत था। मुनि सुदर्शन जी सड़क से कुछ दूर रेत पर गिरे। नाभा के भाइयों को दर्शन दे रहे थे। उनकी कोई असावधानी नहीं थी। किन्तु गाडी के टक्कर मारते ही मुनि सुदर्शन जी एवं तीनों भाई झाड़ियों में जा गिरे। तीव्र वेग से हुए आघात से मुनि सुदर्शनजी कुछ क्षण के लिए बेहोश हो गये। अध्यापक श्रावक श्री रामकुमार जी, श्री रमेश कुमार जी जैन दोनों व्याख्याता है। पास के गांव के स्कूल में पढाते हैं। व्याख्याता रमेश जी जैन ने मुनिश्री को संभाला। जिस जीप में बैठाकर हिसार लेकर आये। डॉक्टर रमेश जैन के हॉस्पिटल में पहुंचाया। डॉ. रमेश ने तत्काल अपने क्लिनिक में गहन जांच एवं चिकित्सा शुरू की। कुछ क्षण बाद मुनिश्री को होश आ गया।

श्रद्धेय आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी को यह समाचार ज्ञात हुआ। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने पूरे घटना क्रम की जानकारी की। मुनि भूपेन्द्रकुमार जी (संघ मुक्त) एवं मुनि रमेशकुमारजी को हॉस्पिटल जाने का निर्देश दिया। दोनों मुनि तत्काल मुनि सुमेरमल जी 'सुदर्शन' जी की सेवा में पहुंच गये। **2** जनवरी को मुनि सुमेरमलजी के सहवर्ती मुनि तन्मय कुमार जी और मुनि जयन्त कुमार जी (संघ मुक्त) सभी संत उनकी परिचर्या में जुट गये।

अगले दिन हम दोनों संत अग्रसेन भवन में विराजमान आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के दर्शन करके सारी स्थिति निवेदन की। गुरुदेव ने मुझे मुनिश्री की सेवा में नियुक्त किया। हिसार से टोहना की ओर विहार करते समय आचार्य प्रवर स्वयं हास्पिटल पधारे। मुनिश्री को दर्शन दिये। मुनिश्री ने अहोभाव से कृतज्ञता ज्ञापित की।

मुनि रमेशकुमारजी ने उनकी अग्लानभाव से विशेष सेवा की। मुंह से थूकने से लेकर शरीर की सारी क्रियाओं को संभाला। इसके लिए मुनि सुमेरमलजी ने आचार्य महाप्रज्ञजी को जो पत्र दिया उसमें भी लिखा था-'रमेश मुनि ने जो मेरी सेवा की, मैं उसे कभी भूल नहीं सकता।'

क्रमशः